

डॉ. जॉन ओसवाल्ट , निर्गमन, सत्र 3, निर्गमन 5-6

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जॉन ओसवाल्ट और निर्गमन की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 3, निर्गमन 5-6 है।

आइए प्रार्थना से शुरू करें। पिता, हम आप में आनन्दित हैं। आप आनन्द का कारण हैं। यदि आप नहीं होते, तो दुनिया में कोई आनन्द नहीं होता।

यह तो बस एक कुत्ते-खाओ-कुत्ते वाली जगह होगी, हर कीमत पर योग्यतम का अस्तित्व, सब कुछ पर भाग्य का शासन। शुक्रिया कि ऐसा नहीं है। शुक्रिया कि आप हमारे पिता हैं, कि आप हमारी हर बात की परवाह करते हैं।

आप हर उस चीज़ में दिलचस्पी रखते हैं जिसमें हमारी दिलचस्पी है। प्रभु, आपका धन्यवाद कि आप हमसे इतना प्यार करते हैं। जब हम पाप करते हैं और भटक जाते हैं तो आपका दिल टूट जाता है, और फिर भी प्रभु, आप हमें त्यागते नहीं हैं।

आप बार-बार हमसे संपर्क करते हैं, और हम आपका धन्यवाद करते हैं। यह खुशी की बात है। इसलिए हम आज शाम आपके वचन के इर्द-गिर्द एक साथ रहने के इस अवसर के लिए आपका धन्यवाद करते हैं।

हम आपको आपसी प्रेरणा के लिए धन्यवाद देते हैं, क्योंकि हम साथ मिलकर साझा करते हैं, सोचते हैं और बात करते हैं, और हम प्रार्थना करते हैं कि आज शाम को फिर से ऐसा हो। जब हम शास्त्र के इस हिस्से को देखते हैं, हे प्रभु, इसे हमारे लिए खोल दें, सिर्फ इसलिए नहीं कि हम अपने दिमाग को नई जानकारी से उत्तेजित कर सकें, बल्कि इसलिए कि आपकी पवित्र आत्मा हमारे दिलों में गहराई से प्रवेश कर सके और खोई हुई दुनिया के लिए हमारे जीवन को बदल सके। आपके नाम में, हम प्रार्थना करते हैं, आमीन।

ठीक है, पिछले हफ़्ते, जब हम अंत की ओर बढ़ रहे थे, तो मैंने एक बिंदु छोड़ दिया था, और वह फिरौन के दिल के कठोर होने का बिंदु था। जब मैं यात्रा करता हूँ, तो अक्सर मेरे पास एक प्रश्न और उत्तर सत्र होता है। आमतौर पर दो प्रश्न आते हैं।

फिरौन के दिल का कठोर होना और कनानियों का कल्लेआम। बाकी सभी सवाल आसान हैं। तो फिरौन के दिल के कठोर होने के बारे में क्या? सबसे पहले, याद रखें कि फिरौन एक अच्छा आदमी नहीं था।

फिरौन एक दोस्ताना व्यक्ति नहीं था जिसे आसानी से सही काम करने के लिए मनाया जा सके। फिरौन खुद को भगवान मानता था। जब से वह कुछ भी समझने लायक बड़ा हुआ, तब से उसे भगवान की तरह माना जाने लगा।

उनका तरीका कानून था। अभी तक, हमें मिस्र में कोई कानून संहिता नहीं मिली है। आपको वे मेसोपोटामिया में मिलेंगे, वह प्रसिद्ध संहिता जिसके बारे में हममें से कई लोगों ने हाई स्कूल में पढ़ा था, हम्मुराबी की संहिता, और मेसोपोटामिया से चार या पाँच अन्य संहिताएँ हैं।

मिस्र में कोई कानून संहिता नहीं है। और यह अनुमान इसलिए है क्योंकि फिरौन ने इसे अपने हिसाब से बनाया था। वह ईश्वर था, और आज जो कुछ भी उसने कहा वह कानून था, और कल जो कुछ भी उसने कहा वह कानून था।

तो, यह कोई अच्छा आदमी नहीं है। यह एक सैन्य तानाशाह है जो सोचता है कि वह भगवान है और अपनी मर्जी से काम करने पर अड़ा हुआ है। तो, यह ऐसा मामला नहीं है कि यह अच्छा आदमी कहे, ओह, क्या यह अच्छा नहीं होगा कि इब्रानियों को जाने दिया जाए, और भगवान कहे, नहीं! हम इस बारे में बात नहीं कर रहे हैं।

यदि आप वहाँ दिए गए संदर्भों को देखें तो आप पाएंगे कि वास्तव में तीन अलग-अलग बातें कही गई हैं। सबसे पहले, यह कथन है, मैं, यानी ईश्वर, उसका हृदय कठोर कर दूंगा। लेकिन, अध्याय 8, श्लोक 15 और 32 में, यह केवल इतना ही कहा गया है, फिरौन का हृदय कठोर था।

यह सिर्फ एक तथ्य है। और फिर, माफ़ कीजिए, यह था, मैं यहाँ संदर्भ बदलने जा रहा हूँ। इसके लिए चार संदर्भ हैं।

अध्याय 7, श्लोक 13 और 22; अध्याय 8, श्लोक 19 और 9; तथा अध्याय 7 और 35। इस प्रकार, पाँच बार हमें केवल इतना बताया गया है कि उसका हृदय कठोर था।

वह एक कठोर हृदय वाला व्यक्ति था। और फिर दो और हैं जो मुझे लगता है कि बहुत महत्वपूर्ण हैं। 8, 15, और 32, जहाँ लिखा है, फिरौन ने अपना हृदय कठोर कर लिया।

तो फिर, हम इस बारे में बात नहीं कर रहे हैं कि परमेश्वर ने इस व्यक्ति के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ किया। वह इन लोगों को जाने देने के लिए क्यों तैयार नहीं है? वास्तव में, इसके दो कारण हैं। पहला, हम अध्याय 14 में देखते हैं, यदि आप वहाँ देखेंगे, अध्याय 14, श्लोक 5, जब मिस्र के राजा को बताया गया कि लोग भाग गए हैं, तो फिरौन और उसके अधिकारियों ने उनके बारे में अपना विचार बदल दिया और कहा, हमने क्या किया है? हमने इस्राएलियों को जाने दिया और उनकी सेवाएँ खो दीं।

तो, एक कारण यह है कि उसने अपना दिल कठोर कर लिया क्योंकि यह बहुत महंगा होगा। लेकिन एक और कारण है कि फिरौन ने अपना दिल कठोर कर लिया। और वह यह है कि कोई भी मुझे नहीं बताता कि मुझे क्या करना है।

एक अर्थ में यहोवा मूसा से कह रहा है, इन लोगों को जाने देने का मेरा आदेश उसके हृदय को कठोर कर देगा। तो, हमारे पास एक ऐसा व्यक्ति है जो खुद को ईश्वर मानता है, एक ऐसा व्यक्ति जो मानता है कि वह जो चाहे कर सकता है, जब चाहे। और ईश्वर कहता है कि इस व्यक्ति के साथ कुछ होने वाला है।

उसे ऐसी स्थिति में डाल दिया जाएगा जहाँ उसे पता चलेगा कि उसे जो करना है, उसे करने की पूरी आज़ादी नहीं है। क्यों? क्योंकि भगवान उसे ऐसा करने नहीं देंगे? नहीं, नहीं। क्योंकि उसने अपनी पूरी ज़िंदगी में यह तय कर लिया है कि वह जो चाहे करेगा।

और यह अब उसे ऐसी स्थिति में ले जाता है जहाँ उसके पास अब चुनाव की आज़ादी नहीं है। आप में से कुछ लोग इसे जानने के लिए बहुत छोटे हैं। हममें से कुछ लोग इसे जानने के लिए काफी बड़े हैं।

किसी काम को लंबे समय तक करते रहने पर आपको कुछ और करने की आज़ादी नहीं मिलती। मैं ऐसे छात्रों से मिलता हूँ जिन्होंने कभी भी कक्षा के बाहर कुछ अतिरिक्त नहीं किया है। और वे कहते हैं, ओह प्रोफ़ेसर, इस कक्षा में मैं यह करने जा रहा हूँ।

और मैं खुद से कहता हूँ, शुभकामनाएँ, प्रिये। उन्होंने एक रास्ता चुना है, और उन्हें लगता है कि उनके पास आज़ादी है, लेकिन अब उनके पास आज़ादी नहीं है। और इसलिए, यह फिरौन के साथ है।

भगवान ने दुनिया को इस तरह से बनाया है कि हम अपने विकल्पों में बंधे हुए हैं। और अब हमारे पास कुछ और करने की आज़ादी नहीं है। इस आदमी के पास लोगों को उदारता से जाने देने की आज़ादी नहीं है, भले ही वह ऐसा करना चाहे, और वह ऐसा नहीं करना चाहता।

अब उसके पास आज़ादी नहीं है। तो, मैं जो कह रहा हूँ, वह यह है कि यह प्रक्रिया परमेश्वर द्वारा फिरौन के कठोर हृदय की आवाज़ से कहीं ज़्यादा जटिल है। क्या परमेश्वर के कार्यों के कारण फिरौन का हृदय कठोर था? हाँ।

लेकिन क्या परमेश्वर ने फिरौन के हृदय को उसकी इच्छा के विरुद्ध कठोर कर दिया? कभी नहीं। कभी नहीं। फिरौन वही कर रहा था जो वह करना चाहता था, क्योंकि उसने अपने पूरे जीवन में जो चुना था, उसके परिणामस्वरूप वह वही कर रहा था।

ठीक है, जाने से पहले कोई सवाल या टिप्पणी? फिरौन की उम्र कितनी रही होगी? खैर, हम नहीं जानते कि फिरौन वास्तव में कौन था, लेकिन संभवतः, वह 40 के दशक में रहा होगा। लेकिन हम वास्तव में नहीं जानते। जैसा कि हमने पिछले सप्ताह कहा था, इन दाइयों का नाम तो है, लेकिन फिरौन का नहीं।

और कुछ? ठीक है, आखिरी मौका। अध्याय 5 में, मूसा ने लोगों की स्वीकृति प्राप्त कर ली थी, वे अध्याय 4 के अंत में बहुत उत्साहित थे, भगवान ने हमारी पुकार सुनी है, और उन्होंने झुककर पूजा की। यहीं पर चौथा अध्याय समाप्त हुआ।

अब, वे फिरौन के पास जाते हैं। इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यही कहता है: मेरे लोगों को जाने दो ताकि वे जंगल में मेरे लिए एक उत्सव मना सकें। अब, क्या यह धोखा था? यह मेरे लोगों को जाने दो ताकि वे यहाँ से निकल सकें और वादा किए गए देश में जा सकें।

अब, मुझे नहीं पता कि आपने आगे पढ़ा है या नहीं, लेकिन अगली पाँच विपत्तियों में, उनमें से हर एक में, मूसा कहता है, मेरे लोगों को जाने दो ताकि वे जंगल में जाकर मेरी आराधना करें। तो, मैं पूछ रहा हूँ, आपको क्या लगता है? क्या यह धोखा है? बिल्कुल। बिल्कुल।

वे उसकी पूजा करने जा रहे थे। यह उसी से संबंधित है जिसके बारे में हमने दो सप्ताह पहले पुस्तक के उद्देश्य के बारे में बात की थी। परमेश्वर ने लोगों को मिस्र से क्यों निकाला? ताकि वे जान सकें कि वह कौन है और ताकि वह घर वापस आ सके।

वादा किया गया देश रस है। इसलिए, नहीं, यह बिल्कुल भी भ्रामक नहीं है। यही कारण है कि उन्हें छुड़ाया जा रहा है ताकि वे जंगल में जा सकें और उस एक ईश्वर की आराधना कर सकें जो ईश्वर है।

और उस आराधना में, अनुभव करें कि हम सभी किस लिए बनाए गए हैं। और संयोग से, वे वादा किए गए देश में जा सकते हैं। तो, यह काफी महत्वपूर्ण है।

ठीक है, यह अगले सप्ताह की पृष्ठभूमि में है। ऐसा होगा, लेकिन यह ठीक है। फिरौन समझता है कि तीन दिन में वे मिस्र की सीमा से आगे निकल जाएंगे।

अगर वे भगवान की पूजा करने के लिए तीन दिन जंगल में जाते हैं, तो वे यहाँ से बाहर हो जाते हैं। और इसीलिए हम अगले सप्ताह के अध्ययन में देखेंगे कि वह सौदेबाजी करने की कोशिश करता है। तो हाँ, वह जानता है कि अगर वे पूजा करने के लिए तीन दिन की यात्रा करके जंगल में जाते हैं, तो वे वापस नहीं आएंगे।

लेकिन यह दिलचस्प है। यह मेरे लोगों को इसलिए नहीं जाने देना है क्योंकि वे आज्ञादी के हकदार हैं। यह मेरे लोगों को इसलिए नहीं जाने देना है क्योंकि उन पर बहुत लंबे समय से अत्याचार हो रहे हैं।

मेरे लोगों को जाने दो ताकि वे जाकर मेरी पूजा कर सकें। अब, यह थोड़ा राजनीतिक है। लेकिन अमेरिका में जो हुआ है वह यह है कि हम स्वतंत्रता की पूजा करने लगे हैं, और यह हमें मार रहा है।

हमें भगवान की पूजा करने के लिए बनाया गया है। क्या भगवान उत्पीड़न से नफरत करते हैं? बिल्कुल। क्या भगवान मानव बंधन से नफरत करते हैं? बिल्कुल।

लेकिन हमारे लिए उनके मन में सिर्फ बंधन से मुक्ति की बात नहीं है। और यह इस पुस्तक में एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है: अध्याय पाँच, श्लोक दो।

उस प्रश्न को देखें। और याद रखें, आपको यहाँ तक अपने दिमाग में यह बात रखनी है। जब भी आप भगवान को देखते हैं, तो वह यहोवा के बराबर होता है।

फिरौन क्या कह रहा है? कोई इसे पढ़े। आयत दो। हाँ।

हाँ। यहाँ असली सवाल क्या है? यह यहोवा कौन है? यह कौन आदमी है जो यहाँ बालों वाले दाढ़ी वाले सेमिट्स का एक झुंड भेजने की हिम्मत करता है और मुझे कहता है कि उन्हें जाने दो? मैं किसी यहोवा को नहीं जानता। तो, विपत्तियों का उद्देश्य क्या है? परमेश्वर की संप्रभुता।

फिरौन को यह सिखाने के लिए कि यहोवा वास्तव में कौन है। अगर लोगों को मिस्र से बाहर निकालना ही सब कुछ था, तो एक बड़ी महामारी ने यह सब कर दिया होता। धमाका, वे यहाँ से बाहर निकल गए।

मुद्दा यह है कि यहोवा कौन है? और यही विषय यहाँ फिर से चलने वाला है। हम इसे देखेंगे, खास तौर पर अगले सप्ताह के अध्ययन में। यहोवा को जानने और उसकी आज्ञा मानने के बीच क्या संबंध है? मैं उसे नहीं जानता, और मैं तुम्हें जाने नहीं दूँगा।

यहोवा को जानने और उसकी आज्ञा मानने के बीच क्या संबंध है? अगर मैं उसकी आज्ञा नहीं मानता तो इसका क्या मतलब है? मैं उसे नहीं जानता। मैं उसे नहीं जानता जो मैं हूँ, जो सभी चीज़ों का स्रोत है। मैं उसे नहीं जानता जिसने अपनी उँगलियों के इशारे से दुनिया को बनाया है।

अगर मैं अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर कहता हूँ, नहीं, तो यह बहुत स्पष्ट संकेत है कि मैं नहीं जानता कि मैं किससे बात कर रहा हूँ। और फिर भी, और फिर भी, हम जानते हैं। और वह इसकी अनुमति देता है।

वह यह नहीं कहता कि आपके पास एक ही मौका था और बस इतना ही। नहीं, नहीं। बार-बार, बार-बार।

यहोवा कौन है? दयालु, क्रोध करने में धीमा, दयालुता से भरा हुआ। हम पुराने नियम को पढ़ते हैं, और हम इस परमेश्वर को देखते हैं जो बुरा है। लेकिन हम भूल जाते हैं।

वह लगभग 87,000 अच्छे कारणों से पागल हो गया है। ठीक है। तो, फिरौन उनके अनुरोध की ईमानदारी के बारे में क्या सोचता है? आयत चार और पाँच हमें क्या बताती हैं? क्या उन्होंने वास्तव में किसी ईश्वर से सुना है? वह क्या कह रहा है? चार और पाँच।

इसमें क्या लिखा है? वे बस काम से बाहर गए थे। उन्होंने यह सब बनाया है। हाँ।

कोई यहोवा नहीं है। तुमने उसे बनाया है। मैंने उसके बारे में कभी नहीं सुना।

तो, अगर मैंने उसके बारे में कभी नहीं सुना है, तो वह अस्तित्व में नहीं है। आपने यह सब गढ़ा है। इससे यह पता चलता है कि धर्मनिरपेक्ष लोग हमारी आध्यात्मिक चिंताओं को कैसे समझते हैं? वे ईश्वर को नहीं जानते।

इसलिए, वह अस्तित्व में नहीं है। हम अपने निजी उद्देश्यों के लिए इसे गढ़ रहे हैं। यह सिर्फ एक सहारा है।

यह मूर्खता है। हाँ। हाँ।

इसलिए, हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए अगर धर्मनिरपेक्ष दुनिया एक पल के लिए भी यह न सोचे कि हम ईमानदार हैं। आप ईमानदार नहीं हो सकते। कोई ईश्वर नहीं है।

उन्हें एक सवाल का जवाब देना होगा। हाँ। और यह बहुत ही अप्रिय विचार है।

तो, नहीं। लेकिन फिर से, मुझे लगता है कि हमारे लिए यह समझना बहुत ज़रूरी है कि यह कोई सवाल नहीं है कि, ठीक है, हम वास्तव में उस ईश्वर को पसंद नहीं करते हैं जिसके बारे में आप बात कर रहे हैं। हम सहमत हैं कि वह मौजूद है, लेकिन हम पूरी तरह से नहीं।

नहीं, मैं किसी यहोवा को नहीं जानता। इसलिए, कोई यहोवा नहीं है।

हम इसकी मांग नहीं करते। यह भी सच है। यह भी सच है।

ठीक है। तो, वह प्रसिद्ध आदेश देता है। मिट्टी की ईंटों को धूप में सूखने के दौरान एक साथ रखने के लिए किसी प्रकार का बांधने वाला पदार्थ होना चाहिए।

दुनिया के कई हिस्सों में इस काम के लिए समुद्री सीपियों का इस्तेमाल किया जाता है। मिस्र में आमतौर पर पुआल का इस्तेमाल किया जाता था। इसे बांधने के लिए इसे बांधा जाता था।

और उन्हें भूसा दिया गया था। और अब उन्हें भूसा नहीं दिया जाएगा। उन्हें अपना भूसा खुद ही लाना होगा।

श्लोक 15 से 21. ओवरसियरों ने क्या नहीं किया? उन्होंने परमेश्वर को पुकारा नहीं। आपको ऐसा लगता है कि वे यहोवा को भी नहीं जानते थे।

या अगर उन्होंने ऐसा किया भी, तो वह उनके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा नहीं था। इसलिए वे अत्याचारी फिरौन के पास जाते हैं और राहत पाने की कोशिश करते हैं। और उन्हें कोई राहत नहीं मिलती।

और वह कहता है, बिल्कुल नहीं। इसलिए, पद 20 में, जब वे फिरौन से चले गए, तो उन्होंने मूसा और हारून को उनसे मिलने के लिए इंतजार करते हुए पाया। और उन्होंने कहा, अब यहीं पर मैंने न्यू लिविंग ट्रांसलेशन कमेटी में एक वोट खो दिया है।

मुझे पता था कि मैं ऐसा करूँगा, लेकिन मैं इसे किसी भी तरह से मंच पर लाना चाहता था। एक बहुत ही समकालीन संस्करण कहेगा, भगवान तुम्हें धिक्कार है। उन्होंने यही कहा।

तुम्हें पता है, NIV बहुत, बहुत बढ़िया है। प्रभु तुम पर नज़र रखें और तुम्हारा न्याय करें। हाँ।

भगवान तुम्हें धिक्कार है, मूसा। वे मूसा और हारून को क्यों दोषी ठहरा रहे हैं? उन्होंने यह सब बनाया है। हाँ, हाँ।

मुझे लगता है आप बिल्कुल सही हैं। हाँ, हाँ, मुझे लगता है आप बिल्कुल सही हैं।

मुझे लगता है कि आप बिल्कुल सही हैं। और क्या यह दिलचस्प नहीं है? चलिए इसे थोड़ा और पीछे ले चलते हैं। मूसा और हारून ने ऐसा क्या किया जिससे वे मुसीबत में पड़ गए? उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानी और क्या किया? हाँ।

अगर मूसा और हारून दूर रहते और फिरौन को नाराज़ नहीं करते, तो सब कुछ ठीक हो जाता। हाँ, बिल्कुल। हम अपने बंधन में रहना पसंद करेंगे बजाय इसके कि हम अपने बंधन से मुक्त होने में आने वाली चुनौतियों का सामना करें।

हाँ, बिल्कुल, बिल्कुल।

भगवान दो बड़े हेलीकॉप्टरों के साथ आएं और हमें यहाँ से बाहर ले जाएंगे। और इससे हमें कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ेगा, और इससे किसी को कोई नुकसान नहीं होगा। उद्धार के उपदेश में अक्सर यही होता है।

अब मैं एक उपदेशक हूँ, मैं बात कर सकता हूँ। यीशु को स्वीकार करो, और तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी। सच तो यह है कि तुम यीशु को स्वीकार करते हो, और परेशानी अभी शुरू ही हुई है।

जब आप खाई के तल पर लेटे होते हैं और दुश्मन को कोई चिंता नहीं देते, तो जीवन बहुत आसान हो सकता है। लेकिन बस फायरिंग स्टेप पर कदम रखें और यीशु का झंडा लहराना शुरू करें, और अंदाज़ा लगाइए क्या होगा? आप पर निशाना साधते हुए एक आग आने वाली है। और हमारे उद्धार के उपदेश में, हाँ, हमें लोगों से कहना चाहिए, मसीह को स्वीकार करें, और आपकी समस्याओं, आपकी कठिनाइयों से मुक्ति मिलेगी, लेकिन मुक्ति बढ़ती समस्याओं और बढ़ती कठिनाई के माध्यम से आ सकती है।

यही वो बात है जिसके लिए ये लोग तैयार नहीं थे। अगर भगवान की पूजा करने के लिए जंगल में जाना ज़्यादा ईंटें बनाने जैसा है, तो इसे भूल जाइए। अगर सब कुछ आसान होता, तो हाँ, भगवान, आप मेरी ज़िंदगी में अपना रास्ता बना सकते थे।

लेकिन अगर यह मुश्किल होने वाला है, अगर इसमें दर्द शामिल है, अगर इसमें संघर्ष शामिल है, तो मुझे बाहर रखें।

मुझे बाहर रखें। मैं वहाँ नहीं जाना चाहता। हाँ, वे यहाँ जो कुछ भी हो सकता है उसके लिए जवाबदेह होने को तैयार नहीं थे।

तो, तूने हमें फिरौन और उसके अधिकारियों के सामने जाने को मजबूर कर दिया है और तूने हमें मारने के लिए उनके हाथ में तलवार थमा दी है। तो मूसा ने क्या जवाब दिया? आयत 22.

क्या तुमने मुझे इन लोगों पर मुसीबत लाने के लिए भेजा है? फिरौन ने यहोवा की पहचान पर सवाल उठाया। मूसा ने क्या सवाल किया? उसके इरादे पर, उसकी अच्छाई पर। अब।

पृष्ठभूमि में, मैं टिप्पणी करता हूँ। और. मैंने यह कई बार कहा है और अगर आप मेरे साथ यहाँ रुकेंगे तो आप इसे और भी बार सुनेंगे।

हिब्रू भाषा में शब्दावली बहुत छोटी है, और इसका मतलब है कि ज़्यादातर शब्दों के अर्थ बहुत बड़े हैं। तो, यह शब्द है। राह, मुझे लगता है कि यह बहुत उपयुक्त लगता है।

राह। यह एक कठोर कण्ठस्थ शब्द है। इसका अक्सर अनुवाद बुराई के रूप में किया जाता है।

और यह एक अच्छा अनुवाद है। लेकिन. इसका मतलब कई अन्य चीजें हैं जो परेशानी का सबब बन सकती हैं।

मैंने छात्रों से कई बार कहा है कि शायद सबसे करीबी अंग्रेजी शब्द बुरा है। हिटलर एक बुरा आदमी था। मेरा दिन खराब चल रहा है।

ओह, नैतिक रूप से बुरा दिन, है न? नहीं, नहीं। बस एक ऐसा दिन जो मुश्किलों से भरा हुआ है। लेकिन मुझे लगता है कि यहाँ इस शब्द का इस्तेमाल बहुत दिलचस्प है।

भगवान, तुम इन लोगों को परेशान कर रहे हो। क्या तुम अच्छे आदमी हो? क्या तुमने मुझे वाकई यहाँ भेजा है? उनके उत्पीड़न को और भी बदतर बनाने के लिए। क्या तुम किसी तरह के भगवान हो? मैं तुम्हारे बारे में नहीं जानता, लेकिन मैं उस स्थिति से गुज़रा हूँ।

एक मिनट रुको, भगवान। एक मिनट रुको। क्या तुम वाकई अच्छे हो? जब तुमने उस तरह का उत्पीड़न नहीं किया, तब भी तुमने उसे होने दिया।

आज मंत्रालय में एक जोड़े के बारे में सुना। जिनका दो महीने में दूसरा घर जल गया है। अब, मुझे नहीं पता कि उनके मण्डली के लोगों ने उनके खिलाफ़ या जॉन वेस्ली के पिता के खिलाफ़ ऐसा किया है।

उनके पादरी-गृह को जला दिया गया। और जॉन वेस्ली अपनी जान बचाने में मुश्किल से सफल हुए, क्योंकि मण्डली इस उपदेशक से तंग आ चुकी थी। लेकिन समस्या यहीं है।

तो, उद्धार के प्रस्ताव ने वास्तव में स्थिति को और भी बदतर बना दिया है। भगवान ने ऐसा क्यों होने दिया? रूथ कहती है कि परीक्षण। उनके पास पर्याप्त निराशा नहीं थी।

हाँ, अध्याय छह, श्लोक एक को देखें। परमेश्वर क्या कहता है? अब तुम देखोगे कि मैं क्या करूँगा। क्या परमेश्वर, क्या परमेश्वर के पास मेरे जीवन में इतनी स्वतंत्रता है कि वह कठिनाई ला सके, अगर इससे उसकी कृपा और अधिक स्पष्ट हो जाए? अगर वे वहाँ से चले गए होते, तो हम यहोवा के बारे में जितना जानते हैं, उससे बहुत कम जानते।

अब आप देखेंगे। क्या भगवान को मेरे जीवन में कठिनाई लाने की आज़ादी है? मेरे जीवन में मुसीबतें लाने की। वह वास्तव में कौन है, यह दुनिया के सामने और भी स्पष्ट हो सकता है।

बिल्कुल, बिल्कुल, बिल्कुल, हाँ। हाँ, हाँ, लेकिन अक्सर। मेरे जीवन का लक्ष्य मसीह को उसकी संपूर्णता में दुनिया के सामने प्रकट करना नहीं है।

मेरे जीवन का लक्ष्य आराम, सहजता और आनंद है। और भगवान, मुझे यह नाम और दावा धर्मशास्त्र पसंद है। या, जैसा कि किसी और ने कहा, इसे बोलो और इसे पकड़ो।

हाँ, मैं एक ऐसा परमेश्वर चाहता हूँ जो मेरा ख्याल रखे और मेरी ज़रूरतों को पूरा करे और जो मैं चाहता हूँ वो करे, जिसे मूर्तिपूजा कहते हैं। क्या मैं उसकी भलाई पर सच्चा भरोसा कर सकता हूँ? मेरी ज़िंदगी उसके हाथों में चली जाए ताकि वो जो चाहे कर सके। ताकि उसे खोई हुई दुनिया में जाना जा सके।

ये बहुत ही गंभीर सवाल हैं। चलिए आगे बढ़ते हैं। अध्याय छह, श्लोक एक से आठ।

हम इस बारे में पहले ही बात कर चुके हैं, पहला प्रश्न। श्लोक तीन ऐसा है जिसने पिछले कुछ वर्षों में विद्वानों की बहुत रुचि जगाई है। परमेश्वर ने मूसा से कहा, मैं यहोवा हूँ।

मैं अब्राहम, इसहाक और याकूब के सामने सर्वशक्तिमान ईश्वर के रूप में प्रकट हुआ। लेकिन अपने नाम यहोवा से मैंने खुद को उन पर पूरी तरह से प्रकट नहीं किया। लेकिन इसमें एक समस्या है।

क्योंकि यहोवा, यह नाम उत्पत्ति में आता है। यह काफी बार आता है। यह कुछ दिलचस्प बिंदुओं पर आता है।

मेरे लिए सबसे दिलचस्प में से एक उत्पत्ति अध्याय 22 है। कृपया वहाँ वापस जाएँ। उत्पत्ति 22।

मैं चाहता हूँ कि तुम देखो। कुछ समय बाद, क्या? श्लोक एक। परमेश्वर ने अब्राहम की परीक्षा ली।

श्लोक दो. फिर परमेश्वर ने कहा—श्लोक तीन.

जब उसने होमबलि के लिए पर्याप्त लकड़ियाँ काट लीं, तो वह उस स्थान की ओर चल पड़ा जिसके बारे में परमेश्वर ने उसे बताया था। आठवें श्लोक तक इसहाक से पूछा जाता है कि मेमना कहाँ है।

अब्राहम ने उत्तर दिया कि परमेश्वर स्वयं होमबलि के लिए मेमना प्रदान करेगा। श्लोक नौ। जब वे उस स्थान पर पहुँचे, तो परमेश्वर ने उसे बताया था।

तो, यह भगवान, भगवान, भगवान, भगवान रहा है। अब श्लोक 11। लेकिन यहोवा के दूत ने स्वर्ग से उसे पुकारा।

पद 12. अब मैं जानता हूँ कि तुम परमेश्वर से डरते हो। इसलिए, अब्राहम ने पद 14 में उस स्थान को यहोवा द्वारा प्रदान किया जाने वाला स्थान बताया।

आज के दिन तक यहोवा के पर्वत पर इसका प्रबन्ध किया जाएगा—श्लोक 16. यहोवा की यह वाणी है, मैं अपनी ही शपथ खाता हूँ।

क्या यह दिलचस्प नहीं है? बलिदान के क्षण तक, यह ईश्वर है। अब मुझे लगता है कि निर्गमन 6-3 के दो संभावित समाधान हैं। एक यह है कि, नहीं, वे यहोवा नामक लेबल को नहीं जानते थे।

मूसा के समय तक। और फिर मूसा ने, मुझे संदेह है, उत्पत्ति से जुड़ी मौखिक परंपराओं को लिखवाया।

मूसा ने कहा है, अरे, यहाँ यहोवा काम कर रहा है। अब्राहम ने उसे ऐसा नहीं कहा। अब्राहम ने उसे बुलाया, परमेश्वर के पर्वत पर, यह प्रदान किया जाएगा।

लेकिन मूसा कह रहा है, आह, यह यहोवा है जिसे मैं जान गया हूँ। यह एक संभावना है। दरअसल, उन्हें अभी तक लेबल का पता नहीं था।

लेकिन एक और संभावना है। और यह उससे संबंधित है जिसके बारे में हम पहले भी कई बार बात कर चुके हैं। पुराने नियम में नाम, लेबल से कहीं ज़्यादा है।

नाम का मतलब है चरित्र, प्रतिष्ठा। इसलिए, मुझे लगता है कि यह संभव है कि उन्हें लेबल पता हो। लेकिन उन्हें उसका नाम नहीं पता था।

वे नहीं जानते थे कि वह वाचा पालन करने वाला परमेश्वर है। इस अर्थ में कि उन्हें यह जानना चाहिए था। वे नहीं जानते थे कि वह निवास करने वाला परमेश्वर है।

इस अर्थ में कि उन्हें यह जानना चाहिए था। वे नहीं जानते थे कि वह सृष्टिकर्ता है इस अर्थ में कि उन्हें यह जानना चाहिए था।

तो यह दूसरी संभावना है। और मुझे लगता है, जैसा कि उस आदमी ने कहा, यह आपको पैसे देता है और आपको विकल्प देता है। यहाँ क्या हो रहा है।

अगर मुझे अपनी गर्दन पर पट्टी बांधनी पड़े, तो मैं इस तरफ आऊंगा और कहूंगा, हां, मुझे लगता है कि वे लेबल जानते थे। लेकिन मुझे नहीं लगता कि वे उसे वैसे जानते थे जैसे उन्हें उसे जानना

चाहिए था। ऐसा करने का मेरा एक कारण यह है कि हम यहां जिस चीज से गहनता से जूझने जा रहे हैं। तब आपको पता चल जाएगा।

अभी आप नहीं जानते। आपने अभी तक अनुभव नहीं किया है। मैं कौन हूँ और कैसा हूँ और मैं क्या करने जा रहा हूँ... लेकिन आप करने जा रहे हैं।

तो, मैं उस तरफ आना चाहूँगा। लेकिन यह स्वर्ग के लिए पूछे जाने वाले सवालों में से एक है। ठीक है।

वैसे भी, विद्वान पिछले कुछ सालों से इस पर बहस कर रहे हैं। उनका तर्क है कि दो अलग-अलग किताबें थीं। एक यहोवा की किताब थी और दूसरी एलोहीम की किताब।

एलोहिम ईश्वर है। किसी समय, किसी ने कैंची लेकर उन्हें अलग-अलग काटा और फिर से चिपका दिया। और यह सिद्धांत पिछले 150 वर्षों से पुराने नियम के अध्ययन पर हावी रहा है।

और यह अभी भी मौजूद है। अगर आपको विश्वास नहीं है कि भगवान ने इसे प्रेरित किया है, तो इससे बेहतर जवाब मिलना मुश्किल है। ठीक है।

तीसरा। अध्याय 6, श्लोक 1 के अनुसार परमेश्वर अपने स्वभाव और चरित्र के बारे में क्या प्रकट करने जा रहा है? ठीक है? परमेश्वर की शक्ति। मेरे शक्तिशाली हाथ के कारण, वह उन्हें जाने देगा।

मेरे शक्तिशाली हाथ के कारण, वह उन्हें इस देश से बाहर निकाल देगा। इससे पहले कि यह सब खत्म हो जाए, आप 'मैं हूँ' की शक्ति के बारे में कुछ पता लगाने जा रहे हैं। ठीक है? श्लोक 2 और 3 में, वे परमेश्वर के चरित्र के बारे में क्या सीखने जा रहे हैं? हम्म-हम्म।

पद 3 क्या कहता है? मैंने क्या किया? मैं प्रकट हुआ। आप समझ जाएँगे कि वह प्रकट करने वाला परमेश्वर है। जो अपने वादों को पूरा करता है।

अब्राहम, इसहाक और याकूब को मरे हुए 300 साल हो चुके हैं। मैंने तुम्हारे पूर्वजों से एक वादा किया था। ज़मीन के बारे में। संतान के बारे में। दुनिया के लिए आशीर्वाद बनने के बारे में। तुम देखोगे कि मैं अपने वादे पूरे करता हूँ।

वाह। पद 4 और 5 में वह अपने बारे में क्या प्रकट करने जा रहा है? वह वाचा पालन करने वाला परमेश्वर है। क्यों? इसमें क्या लिखा है? पद 5. मेरे पास क्या है? कराहना सुना है।

हाँ। वह वाचा का पालन कर रहा है क्योंकि वह परवाह करता है। यह सिर्फ़ एक कानूनी सौदा नहीं है।

हाँ, मैंने वहाँ के लोगों से एक वादा किया था और मुझे लगता है कि मुझे इसे किसी भी तरह निभाना होगा। मैं नहीं चाहता, लेकिन मुझे करना ही होगा। नहीं।

मैंने उनके पूर्वज से वादा किया था। और मैं कैसे खड़ा होकर उनकी चीखें और कराहें सुन सकता हूँ और इसके बारे में कुछ नहीं कर सकता? श्लोक 7 के बारे में क्या? वहाँ वह अपने बारे में क्या प्रकट करने जा रहा है? मैं क्या करूँगा? मैं तुम्हें अपने लोगों के रूप में स्वीकार करूँगा और मैं तुम्हारा परमेश्वर बनूँगा। संबंधपरक प्रेम का परमेश्वर।

तुम मेरे लोग होगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा, जो पुराने नियम में एक धागे की तरह चलता है। मैं खुद को तुम्हें सौंप दूँगा। मैं वही हूँ जो मैं हूँ।

मैं उन सभी का स्रोत हूँ, लेकिन मैं खुद को तुम्हें सौंप दूँगा। अब, यह मेरे लिए विशेष रूप से मार्मिक है क्योंकि मैंने अपने जीवन का बहुत सारा समय यशायाह और ईश्वर कितना अच्छा है, इस पर गहनता से अध्ययन करने में बिताया है। लेकिन वह वाक्यांश जो यशायाह की विशेषता है, पवित्र, बिल्कुल पारलौकिक, बिल्कुल अलग, ब्रह्मांड में किसी और चीज़ से अलग।

जो अपने आप को बहुत ही अयोग्य लोगों के समूह को मुफ्त में दे देता है। हमारे जैसे। कैसा भगवान है।

पद 8. वह अपने बारे में क्या प्रकट कर रहा है? हमने इसे यहाँ देखा है। वह अपने वादों को पूरा करता है। वह अपनी वाचा को पूरा करता है।

वह वफ़ादार है। भरोसेमंद है। हे परमेश्वर, क्या तूने मुझे इन लोगों को बुरा करने के लिए यहाँ भेजा है? नहीं, मूसा।

लेकिन अब, इस अधिक कठिन परिस्थिति के कारण, तुम मेरे बारे में कुछ ऐसी बातें देखने जा रहे हो जो तुम्हें अन्यथा पता नहीं होती। क्या यह ठीक है, मूसा? तो, क्या हुआ? श्लोक 9. मूसा ने इस्राएलियों को यह बताया, और उन्होंने कहा, ओह, परमेश्वर का धन्यवाद। उन्होंने उसकी बात नहीं सुनी।

ओह, उन्होंने कुछ हफ़्ते पहले सुना था जब मूसा और हारून उस छड़ी के साथ आए थे जो साँप में बदल जाती है और वह हाथ जो कोढ़ बन जाता है और फिर साफ हो जाता है। ओह हाँ, उन्हें लगा कि यह अच्छा था। लेकिन अब, नहीं।

नहीं, यह दुखदायी होगा। हम निराश हैं। हम टूट चुके हैं।

हम भगवान को कोई मौका नहीं देंगे। और भगवान यह समझते हैं। इसलिए, भगवान ने मूसा से कहा, जाओ।

मिस्र के राजा फिरौन से कहो कि वह इस्राएलियों को अपने देश से जाने दे। और मूसा ने कहा, हाँ, सर। अगर इस्राएली मेरी बात नहीं सुनेंगे, तो फिरौन मेरी बात क्यों सुनेगा? खासकर भगवान, याद रखो, मैं बात नहीं कर सकता।

अशुद्ध होंठ। हाँ, रूथ इशारा कर रही है कि मूसा ने जो कहा, आयत 12, वह सचमुच है क्योंकि मैं बिना खतना किए हुए होंठों से बोलता हूँ। और फिर, टिप्पणीकार इस बात को लेकर पूरी तरह से भ्रमित हैं कि उसका वहाँ क्या मतलब है।

मैं यहाँ NIV पढ़ रहा हूँ, और इसमें लड़खड़ाने वाले होंठ लिखे हैं। लेकिन रूथ का कहना सही है। खतना न किया हुआ, अशुद्ध।

क्या मूसा अपने चरित्र और अपनी प्रकृति के बारे में कुछ बातें समझता है, जिनसे निपटना ज़रूरी है? मुझे लगता है कि यह बहुत संभव है। हाँ, हाँ। नहीं, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं।

शाब्दिक हिब्रू शब्द है खतनारहित होंठ। क्या हमारे पास यहाँ कुछ अन्य अनुवाद हैं? इसके कुछ अन्य अनुवाद क्या हैं? अकुशल भाषण। कोई और? अनाड़ी वक्ता।

तो, जैसा कि मैंने कहा, टिप्पणीकार इस बात को लेकर संघर्ष कर रहे हैं कि इसका क्या मतलब है। लेकिन मुझे लगता है कि अस्वच्छता का विचार निश्चित रूप से एक ऐसा विचार है जिस पर बहुत ध्यान दिया जाना चाहिए। हाँ, मुझे लगता है कि यह बहुत संभव है।

मुझे इस बारे में सिर्फ़ एक ही बात चिंता में डालती है कि ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ इस पर ध्यान दिया जाता हो। यशायाह में, कोयला उसके होठों को छूता है, और वे साफ़ हो जाते हैं। यहाँ ऐसा नहीं है।

और यही एक जटिल कारक है। यह संभव है। संभव है।

संभव है। लेकिन फिर भी, मुझे लगता है कि इसका उत्तर पाने के लिए हमें स्वर्ग तक इंतज़ार करना होगा। हाँ? हाँ? सवाल यह है कि मूसा ने फिरौन के बेटे के रूप में प्रशिक्षण लिया था, क्या हम उससे एक बहुत ही अच्छा वक्ता होने की उम्मीद नहीं कर सकते? और मुझे लगता है कि इसका उत्तर हाँ है।

मुझे लगता है, फिर से, जैसा कि हमने पिछली बार अध्याय 4 में देखा था, वह बस बहाने ढूँढ रहा है। ठीक है, मैं यहाँ आगे बढ़ना चाहता हूँ। हमारा समय बस खत्म होने वाला है।

अब, हम इस वंशावली पर आते हैं। प्रभु ने मूसा और हारून से इस्राएलियों और मिस्र के राजा फिरौन के बारे में बात की। उसने उन्हें इस्राएलियों को मिस्र से बाहर लाने की आज्ञा दी।

हम यह जानते हैं। और फिर यह सूची आती है। और विशेष रूप से, यह सूची, पद 19 से शुरू होकर, लेवी पर केंद्रित है।

अम्राम ने अपने पिता की बहन योकेबेद से विवाह किया। अब यही एक कारण है कि मुझे लगता है कि वे अध्याय 6, श्लोक 3 से पहले ही यह नाम जानते थे। क्योंकि जो यहोवा का संक्षिप्त रूप है, इसलिए उसकी माँ के नाम का अर्थ है यहोवा महिमावान है।

इसलिए, हमें आश्चर्य होता है कि क्या हो रहा है, खासकर जब यह श्लोक 10, 11, और 12, और श्लोक 28, 29, 30 के बीच में है। प्रभु ने मिस्र में मूसा से बात की। उसने उससे कहा, मैं प्रभु हूँ; मिस्र के राजा फिरौन से वह सब कहना जो मैं तुमसे कहता हूँ।

मूसा ने प्रभु से कहा, जब मैं खतनारहित होठों से बोलता हूँ, तो फिरौन मेरी बात क्यों सुनेगा? यही तो हमने अभी-अभी सुना है। तो, यह वंशावली उन दोनों के बीच क्या कर रही है? हमारे बीच सेमिनरी के छात्रों के लिए, यह इनक्लूसियो है, एक लिफाफा। और हमारे पास दो कथन हैं जो अनिवार्य रूप से एक ही हैं।

यह बिल्कुल वैसा नहीं है, और मैं अगले सप्ताह आपसे इस बारे में पूछने जा रहा हूँ, लेकिन यह मूलतः एक जैसा ही है। और बीच में यह वंशावली है।

आपके क्या विचार हैं? वंशावली वहाँ क्या कर रही है? ठीक है, यह पुरोहिती की वंशावली स्थापित कर रही है। इस समय यह क्यों महत्वपूर्ण है? ठीक है, ठीक है। यह इस उपासना की बात पर वापस आता है, है न? भगवान उन्हें मिस्र से क्यों निकाल रहे हैं? उपासना करने के लिए।

और यह तथ्य कि वे उस परिवार का हिस्सा हैं जिसे आराधना का नेतृत्व करने के लिए नियुक्त किया जा रहा है, मुझे लगता है, काफी महत्वपूर्ण है। और इसलिए, आपने देखा कि श्लोक 26 क्या कहता है। यह हारून और मूसा थे, जिनसे प्रभु ने कहा था कि वे इस्राएलियों को उनके दल द्वारा मिस्र से बाहर निकाल लाएँ।

वे वही लोग थे जिन्होंने मिस्र के राजा फिरौन से इस्राएलियों को मिस्र से बाहर लाने के बारे में बात की थी। यही मूसा और हारून थे। तो हाँ, मुझे लगता है कि यही हो रहा है।

आप स्थापित कर रहे हैं। ये कोई देर से आने वाले लोग नहीं हैं। ये कोई ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जिन्हें भगवान ने टोपी से बाहर निकाला हो।

मुझे अपने लोगों को बाहर निकालने के लिए किसी की ज़रूरत है। मुझे वह पसंद नहीं है। वह काम करेगा।

बिल्कुल, बिल्कुल, बिल्कुल। भगवान काम पर है। और ये दो लोग, अपनी सारी मुश्किलों के बावजूद।

और यह मेरे लिए दिलचस्प है। जहाँ तक मुझे पता है, मैं गलत साबित हो सकता हूँ। मेरे जीवन में ऐसा कम से कम एक बार पहले भी हो चुका है।

शायद दो बार भी। जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, हारून के बारे में कभी भी कुछ अच्छा नहीं कहा जाता। लेकिन वह चुना हुआ महायाजक है।

मेरा अनुमान है कि बाइबल उसके बारे में कुछ भी अच्छा नहीं कहती क्योंकि वह सच्चे महायाजक को उसकी संपूर्ण शुद्धता में चित्रित करना चाहती है। मुझे लगता है कि यही हो रहा है।

लेकिन वैसे भी, बाइबल कह रही है, इन लोगों और उनकी कठिनाइयों, और उनकी, कुछ दृष्टिकोणों से, अपर्याप्तताओं के बावजूद, ये वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए चुना है। और यह मुझे बताता है कि परमेश्वर हमारा उपयोग कर सकता है। परमेश्वर ने आपको संयोग से वहाँ नहीं रखा है जहाँ आप हैं।

अब, मैं नियतिवाद में विश्वास नहीं करता। मैं यह नहीं मानता कि एक अरब साल पहले, भगवान ने एक सूची लिखी और कहा, चलो देखते हैं, सोमवार रात, 20 फरवरी, 2012 को, 8.01 बजे, ओसवाल्ड विल्मोर, केंटकी में एफएएस बिल्डिंग में होगा। मुझे ऐसा नहीं लगता।

मुझे ऐसा नहीं लगता। हालाँकि, मैं यह मानता हूँ कि ईश्वर ने अपनी असीम रचनात्मकता और बुद्धि से आपको और मुझे, अगर हम आज्ञाकारी हैं, तो अपने अच्छे उद्देश्यों को पूरा करने के लिए इस्तेमाल किया है। कुछ भी संयोग से नहीं होता।

इसलिए मैं विकासवाद में विश्वास नहीं करता। क्योंकि विकासवाद कहता है कि जो कुछ भी होता है वह संयोग का परिणाम है। अब, मेरा मानना है कि दुनिया बहुत लंबे समय से अस्तित्व में है।

मुझे नहीं लगता कि इसे 6,000 साल पहले बनाया गया था। मुझे नहीं लगता कि शास्त्रों के प्रति वफादार होने के लिए आपको ऐसा मानना होगा। लेकिन, मुझे लगता है कि आपको शास्त्रों के प्रति वफादार होना चाहिए और कहना चाहिए कि इसमें से कुछ भी संयोग का परिणाम नहीं है, भगवान हर कदम पर मार्गदर्शन कर रहे हैं।

और यह अच्छी खबर है। आइए प्रार्थना करें। धन्यवाद, पिता।

धन्यवाद कि आप मूसा और हारून का उपयोग कर सकते हैं। हमारे जीवन में भलाई के लिए आपके हाथ के लिए धन्यवाद। धन्यवाद, प्रभु, कि कठिन परिस्थितियों में, जब चीजें गलत हो रही हों, जब ऐसा लगे कि आपने चीजों को नियंत्रण से बाहर जाने दिया है, तब भी हम आप पर विश्वास कर सकते हैं, कि आप नियंत्रण में हैं और आप वफादार हैं और आप हर घटना का उपयोग सबसे अच्छे कामों के लिए करेंगे, अगर हम आपको ऐसा करने दें।

हम आपको जानना चाहते हैं, प्रभु। हम स्वीकार करते हैं कि हम आपको सुखद, आसान तरीकों से जानना चाहते हैं। लेकिन, अगर इसके लिए कठिन रास्ते अपनाने पड़ते हैं, तो हाँ, हम आपको जानना चाहते हैं।

आपके नाम पर हम प्रार्थना करते हैं। आमीन। बहुत-बहुत धन्यवाद।

यह डॉ. जॉन ओसवाल्ड और निर्गमन की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 3, निर्गमन 5-6 है।